

बुधाष्टमी व्रत कथा PDF

विदेह राजाओं की नगरी मिथिला में निमि नाम का एक राजा था। वह युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं द्वारा मारा गया। उनकी पत्नी का नाम उर्मिला था। जब उर्मिला राज्यहीन और दरिद्र होकर इधर-उधर घूमने लगी तो वह अपने पुत्र और पुत्री को लेकर अवंती देश चली गई और वहां एक ब्राह्मण के घर में काम करके अपना जीवन यापन करने लगी।

वह विपत्ति से पीड़ित थी, गेहूं पीसते समय वह कुछ गेहूं चुरा लेती थी और शुद्ध रोग से पीड़ित अपने बच्चों का पालन-पोषण करती थी। कुछ समय बाद उर्मिला निर्धन हो गयी। उर्मिला का पुत्र बड़ा होकर अवंती से मिथिला आया और अपने पिता का राज्य पुनः प्राप्त कर राज्य करने लगा। उनकी बहन श्यामला विवाह योग्य हो गयी थी। और बला की खूबसूरत। अवंती देश के राजा धर्मराज ने उसके उत्तम रूप के बारे में सुनकर उसे अपनी रानी बना लिया।

एक दिन धर्मराज ने अपनी प्रियतमा श्यामला से कहा – “वैदेहिनन्दनी! आप बाकी सभी काम कर सकते हैं, लेकिन इन सात जगहों पर कभी न जाएं जहां ताले बंद होते हैं। श्यामला ने 'बहुत अच्छा' कहकर पति की बात मान ली, उसके मन में जिज्ञासा बनी रही।

एक दिन, जब धर्मराज अपने किसी काम में व्यस्त थे, श्यामला ने एक घर का ताला खोला और देखा कि उसकी माँ उर्मिला को एक भयंकर यमदूत द्वारा बाँध दिया गया था और बार-बार गर्म तेल की कढ़ाई में डाला जा रहा था। श्यामला ने लज्जित होकर वह कमरा बंद कर दिया, फिर दूसरा कमरा खोला तो देखा कि वहाँ भी यमदूत उसकी माँ को चट्टान पर रखकर पीस रहे थे और माँ रो रही थी। इसी प्रकार जब उसने तीसरा कक्ष खोला तो देखा कि यमदूत उसकी माँ के माथे पर वार कर रहे थे, उसी प्रकार चौथे में भी भयंकर श्रवण उन्हें खा रहा था, पाँचवें में लोहे का संदंश उन्हें प्रताड़ित कर रहा था। छठी में वह कोल्हू के बीच

में ईख की तरह कुचली जा रही है और जब वह सातवीं खोलती है तो वहां भी हजारों कीड़े उसकी मां को खा रहे हैं और वह खून आदि से लथपथ हो रही है।

यह देखकर श्यामला ने सोचा कि मेरी माता ने ऐसा कौन सा पाप किया है, जिसके कारण उन्हें यह दुर्गति प्राप्त हुई। यह सोचकर उसने सारी कहानी अपने पति धर्मराज को बता दी।

धर्मराज ने कहा- प्रिये! इसीलिए मैंने तुमसे कहा था कि ये सात ताले कभी मत खोलना, नहीं तो वहीं पछताओगे। तुम्हारी माँ ने अपने बच्चों के स्नेह के कारण एक ब्राह्मण के खेत से गेहूँ चुरा लिया था, क्या तुम नहीं जानते कि तुम मुझसे इस विषय में पूछ रहे हो? ये सब उसी क्रिया का परिणाम है। यदि कोई ब्राह्मण का धन स्नेहवश भी खाता है, तो सातों कुलों का पतन हो जाता है और यदि चोरी करके खाता है, तो जब तक सूर्य, चंद्रमा और तारे हैं, तब तक नरक से मुक्ति नहीं मिलती। जो गेहूँ उसने चुराया था, वह कीड़ा बनकर उसे खा रहा है।

श्यामला ने कहा- महाराज! मेरी माता ने पहले जो कुछ किया, वह सब मैं जानती हूँ, परंतु अब आप कोई ऐसा उपाय बताएं, जिससे मेरी माता नरक से बच जाए। धर्मराज ने कुछ देर तक इस पर विचार किया और कहा- प्रिये! आज से सात जन्म पहले वह ब्राह्मणी थी। उस समय तुमने अपनी सखियों के साथ जो बुधाष्टमी का व्रत किया था, यदि तुम उसका फल संकल्पपूर्वक अपनी माता को दे दो तो वह इस संकट से मुक्त हो जाएगी। यह सुनते ही उसने श्यामला की भाँति स्नान किया और अपने व्रत का पुण्य फल माँ को दान कर दिया। व्रत के फल के प्रभाव से उसकी माता ने भी उसी क्षण दिव्य शरीर धारण किया और अपने पति के साथ विमान में बैठकर स्वर्ग चली गईं और बुध ग्रह के पास पहुंच गईं। इस व्रत को करने से धन, धान्य, पुत्र, पौत्र, दीर्घायु और समृद्धि प्राप्त होती है।

